प्रवाह
महोत्सव विश्वास का 75 निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक स्थापना वर्ष : 1948

मनुष्य को चाहिए कि वह किसी से बैर न रखे और हर चीज में अच्छाइयों को खोजे। - रामकृष्ण परमहंस

विश्व स्वास्थ्य संगठन की हालिया रिपोर्ट का यह कहना बेहद चिंताजनक है कि दुनिया में हैजे के मामलों में 2022 की तुलना में 2023 में 48 फीसदी का इजाफा हुआ है। सरकार, समुदाय व व्यक्ति मिलकर काम करें, तो ही इस पर जल्द काबू पाया जा सकता है।

हैजे को हराने की जरूरत

विश्व स्वास्थ्य संगठन की हालिया रिपोर्ट का यह कहना बेहद चिंताजनक है कि दुनिया में हैजे के मामलों में 2022 की तुलना में 2023 में 48 फीसदी का इजाफा हुआ है। रिपोर्ट यह भी कहती है कि हैजे के मामले 2021 के बाद लगभग दोगुनी रफ्तार से बढ़ रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में दुनिया भर में हुए तकनीकी और चिकित्सकीय विकास के बावजूद यह स्थिति वाकई डराने वाली है। उल्लेखनीय है कि पूरी दुनिया में सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में चुनौती बना हैजा विब्रियो कॉलेरी नामक जीवाणु से होता है, जो अमूमन दूषित जल पीने या दूषित भोजन करने से होता है। इसकी शुरुआत डायरिया से होती है, जिसके बाद मरीज के शरीर में पानी की कमी होने लगती है और अगर शीघ्र व सही इलाज न मिले, तो उसकी जान तक जा सकती है। उल्लेखनीय है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 2017 में 2030 तक पूरी दुनिया में हैजे से होने वाली मौतों को 90 फीसदी तक कम करने का लक्ष्य बनाया था और इस पर नजर रखने और चुनौतियों से निपटने में मदद करने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय समन्वय समूह का भी गठन किया था। इसके बावजूद, अगर अफ्रीकी देशों में हैजा अप्रत्याशित ढंग से बढ़ रहा है, तो इसकी वजह गरीबी और गंदगी के अलावा वैक्सीन की कमी भी है। हालांकि इससे निपटने की रणनीति में वैश्विक समन्वय समूह की सलाह पर कुछ बदलाव किए गए हैं, जिनके तहत दो टीकों की खुराक को घटाकर एक कर दिया गया है, ताकि टीकों की मांग और आपूर्ति में संतुलन लाया जा सके। इसके बावजूद हैजे के मामले बढ़ रहे हैं, तो विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, इसकी वजह जलवायु में आ रहे बदलाव हैं, जिनकी वजह से बाढ़, सूखे व चक्रवातों की आवृत्ति काफी बढ़ी है और लोगों तक साफ पानी की पहुंच कम हो गई है। एनसीबीआई की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 2011 से 2020 के बीच हैजे के करीब 565 मामले देखे गए, जिनमें से 263 लोगों ने जान गंवाई। हालांकि ये

आंकड़े ज्यादा भी हो सकते हैं, क्योंकि हैजे के मामलों में रिपोर्ट कम किए जाने की प्रवृत्ति दिखती है। भले ही भारत में इसे अभी बड़ी समस्या न माना जाता हो, लेकिन मृत्युदर ज्यादा होने के कारण इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। वैश्विक स्तर पर देखें, तो हैजा, चूंकि गरीबी से जुड़ी बीमारी है, इसलिए सामाजिक-आर्थिक विकास ही इसका दीर्घकालीन समाधान हो सकता है। सरकार, समुदाय व व्यक्ति मिलकर काम करें, तो इस पर जल्द काबू पाया जा सकता है।

कृत्रिम मेधा : उपलब्धि है या चुनौती

मशीनी शिक्षक में दर्शाए गए गुण इंसानी शिक्षक की अपेक्षा कम नहीं हैं। बताया गया है कि यह विद्यार्थियों के मुश्किल सवालों के जवाब आसानी से दे सकता है। यह नया अभूतपूर्व प्रयोग कौतूहल का विषय तो है ही, ज्ञान के क्षेत्रों में यंत्रों के बढ़ते दखल का भी सूचक है।

शिक्षक-छात्र जीवन में कृत्रिम मेधा (एआई) का प्रवेश एक गंभीर प्रश्न की तरह उपस्थित हुआ है। हालांकि तकनीकी विकास के इस अभूतपूर्व दौर में कृत्रिम मेधा ने हमारे क्रिया-कलापों के बड़े हिस्से में दखल कायम कर लिया है। सूचना क्रांति के साधनों ने तो चमत्कार ही कर दिया है। परंतु हम उन क्रियाओं के परिणाम देखते हैं। ये अमूर्त रूप में उपस्थित शिक्षक/शिक्षिका हमारे मानस पर न जाने कितनी छवियां उत्पन्न कर रहे हैं। मसलन, ऐसी तकनीकि क्रांति की हमने कल्पना भी नहीं की थी, कि हम अपने लिखे या बोले हुए शब्दों को ऐप की मदद से जिस भाषा में चाहें, उसमें परिवर्तित कर सकते हैं। यहां तक कि आप बोलते हैं और ऐप टंकित करता चला जाता है।

श्यौराज सिंह 'बेचैन'
साहित्यकार एवं वरिष्ठ प्रोफेसर

यूट्यूब और गूगल की मदद से बड़े से बड़े प्रश्न का जवाब मिल जाता है। तकनीक के विकास और यांत्रिकता की बहुलता को मानवीय भूमिकाओं में हस्तक्षेप समझकर लंबे समय से चिंता जताई जा रही है। परिणामों को लेकर संचालक भी इसको लेकर कम दुविधा में नहीं रहे हैं। आज से चालीस साल पूर्व जब भारत में 'कंप्यूटर-महाशय' (अमिताभ बच्चन के शब्दों में) का आगमन हो रहा था, तो तब की सरकार को काफी विरोध का सामना करना पड़ा था। कंप्यूटर की सकारात्मक भूमिका हमारे गले नहीं उतर पा रही थी। शिक्षित युवाओं में जिस भय और आशंका का वातावरण बन रहा था, वह यह था कि कंप्यूटर रोजगार खा जाएगा। पचास व्यक्तियों का कार्य अकेला एक कंप्यूटर करेगा, तो 49 बेरोजगार व्यक्तियों की जीविका कैसे चलेगी?

हाल ही में दक्षिण भारत के एक स्कूल में एआई शिक्षिका का प्रवेश हुआ है। अखबारों में सुर्खियों के साथ यह खबर छपी कि 'देश को मिली पहली एआई शिक्षिका, साड़ी पहन कर स्कूल में पहुंची, बच्चों से मिलाया हाथ।' अब शिक्षक/शिक्षिका का स्थान मशीन ले लेगी, तो क्या होगा? इस पर पक्ष-विपक्ष में टिप्पणियों की बाढ़-सी आ गई है। एक

आशंका है, कि यह रोबोट से शिक्षकों का स्थानापन्न होगा। यह शिक्षक की जगह छीन लेगा। यह छात्रों की विषयेतर स्वभाविक जिज्ञासाएं शांत नहीं कर सकेगा, यह प्रोग्रामिंग के अनुसार ही क्रिया करेगा। क्या कक्षा के दौरान छात्रों के जेहन में उठने वाले प्रश्नों के जवाब एआई शिक्षिका दे सकेगी?

केरल के तिरुवनंतपुरम के कई स्कूल में लाए गए 'आईरिस' नामक रोबोट का बतौर शिक्षक निर्माण किसी परंपरागत परिवार रूपी पाठशाला में नहीं हुआ है। या कहें कि जिस प्रकार 'मेकरलैब्स' नामक कंपनी 'आईरिस' का परिवार है, उसी तरह आने वाले तमाम मशीनी शिक्षकों का निर्माण कंपनियों में होगा। तब इंसानी शिक्षकों के शिक्षण, प्रशिक्षण केंद्र को तो बंद ही करना पड़ेगा। रोबोट जब निर्देश के साथ ही मुर्गी, मछली, शेर-गीदड़ पर कविता लिख देगा, गुरु की महिमा पर कहानी रच देगा, तो मौलिक रचनाकारों का क्या होगा?

विडंबना देखिए कि इस मशीनी शिक्षक से ही आशा की जा रही है कि वे शिक्षा का वातावरण बदल देंगे। पर वे तो प्रोग्रामिंग के अनुसार कार्य करेंगे। क्या मशीनी शिक्षक क्लास रूम में बाल-सुलभ मनोरंजन दे सकेंगे? गंभीरता और उदासीनता का प्रदर्शन नहीं होगा। बेशक केरल राज्य के स्कूल (केटीसीटी) में रोबोट साड़ी पहन कर उपस्थित हुई, अगले स्कूल में वह 'टाई-सूट' में भी उपस्थित हो सकती है।

सवाल मशीनी शिक्षका के व्यवहार का भी है। मशीन शिक्षक का पाठ टेपरिकॉर्डर की तरह होगा। वह उतना ही कहेगी, जितनी उसमें प्रोग्रामिंग की गई होगी। न कम बोलेगी और न अधिक बोल पाएगी, लेकिन यह संकेत होगा कि हमारी तकनीक पर निर्भरता बढ़ जाएगी।

यह तो ठीक है कि छात्रों को थोड़ा हास्य, थोड़ा कौतूहल उपलब्ध करा दिया जाए, पर यह भी आवश्यक है कि शिक्षा का माहौल बदला जाए, कई शिक्षक तो कक्षा में ऐसे आकर बैठते हैं, मानो वे किसी शोक सभा में आए हों। ऐसी स्थिति रोबोट की नहीं होगी।

हर प्रकार के मशीनी विकास का प्रभाव मानव के सामाजिक क्रिया-कलाप पर पड़ता है। वैचारिक वस्तु नहीं होने पर भी यंत्र का मानवों के विचार और व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। भारत में जब रेल पटरी बिछाई जाने लगी थी, तब कार्ल मार्क्स ने भारत के सामाजिक व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव की भविष्यवाणी की थी। 16 अप्रैल, 1853 को 'बोरी बंदर' बाम्बे से ठाणे तक 'साहिब', 'सुल्तान' और 'सिंध' नामक तीन इंजनों से इस ट्रेन ने 34 किलोमीटर की यात्रा तय की थी। तब मार्क्स ने जिस ओर इशारा किया था, वह यह था कि रेल में जाति विभाजन संभव नहीं होगा, अस्पृश्यता की कठोरता भी कायम नहीं रह पाएगी।

मीडिया खबरों में मशीनी टीचर को लेकर आशंका या चिंता नहीं है, अपितु मीडिया में इसकी प्रचुर प्रशंसा की गई है। मशीनी शिक्षक में दर्शाए गए गुण इंसानी शिक्षक की अपेक्षा कम नहीं हैं। बताया गया है कि यह विद्यार्थियों के मुश्किल सवालों के जवाब आसानी से दे सकता है। यह नया अभूतपूर्व प्रयोग कौतूहल का विषय तो है ही, ज्ञान के क्षेत्रों में यंत्रों के बढ़ते दखल का भी सूचक है। यह व्यावहारिक चीजों में भी बदलाव कर देगा, पर क्या छात्र और अध्यापक के बीच पैदा होने वाले भावनात्मक रिश्ते को सुरक्षित रखा जा सकता है?

स्कूलों से शिक्षा से वंचित रहने या सचेतन वंचित रखे जाने वाले बच्चों को एक समय ईसाई मिशनरियों ने शिक्षित किया। खासकर अंग्रेजी पढ़ा कर, उन्हें विदेश जाने के योग्य बनाया। कहा जा सकता है कि मानव रूपी शिक्षक के दिमाग में भी तो संस्कारों के रूप में अच्छी-बुरी धारणाएं पल रही होती हैं। प्रेम और घृणा, स्पृश्यता और अस्पृश्यता भी शिक्षक छात्रों पर लागू करते रहते हैं। जाति-धर्म के आग्रहों-दुराग्रहों की भी भूमिकाएं प्रदर्शित होती देखी गई हैं।

शिक्षकों द्वारा एससी/एसटी छात्रों को पानी नहीं पीने देने, कक्षा में प्रवेश न देने, बाहर बिठाने या स्कूली मध्याह्न भोजन में भेदभाव करने जैसे समाचार आते रहे हैं। परंतु मशीनी शिक्षक इस मामले में सभ्य, अनुशासित और प्रोटोकाल का पालन करता नजर आएगा।

भविष्य विज्ञान का है। यंत्रों से घिरते जाना और उन पर निर्भर होते जाना हमारे युग की नियति है। हम चाहें अथवा न चाहें, मशीनों से दूर रहकर हमारी गुजर-बसर नहीं है। वैश्विक विकास के साथ चलने वालों के लिए कोई अलग मशीन-मुक्त द्वीप नहीं बन पाएंगे।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

सुधीर दीक्षित

जलतरंग के समान चंचल इस जीवन में लेश मात्र सुख भी नहीं है। समय अनमोल है, क्योंकि वास्तव में समय ही संसार की एकमात्र ऐसी चीज है, जिसे एक बार गंवा देने पर दोबारा नहीं पा सकते।

गंवाया हुआ समय दोबारा नहीं मिलता

विधाता ने किसी को ज्यादा सुंदरता दी है, किसी को कम दी है। किसी को बुद्धि ज्यादा दी है, किसी को कम दी है। किसी को दौलत ज्यादा दी है, किसी को कम दी है। लेकिन समय उसने सबको बराबर दिया है : एक दिन में चौबीस घंटे। समय ही एकमात्र ऐसी दौलत है, जिसे आप बैंक में जमा नहीं कर सकते। समय का गुजरना आपके हाथ में नहीं होता। यह तो घड़ी की सुई के साथ लगातार आपके हाथ से फिसलता रहता है। आपके हाथ में तो बस इतना रहता है कि आप इस समय का कैसा उपयोग करते हैं। अगर सदुपयोग करेंगे, तो अच्छे परिणाम मिलेंगे, अगर दुरुपयोग करेंगे, तो बुरे परिणाम मिलेंगे। ध्यान देने वाली बात यह है कि हमारे पास कहने को तो चौबीस घंटे होते हैं, लेकिन वास्तव में इतना समय हमारे हाथ में नहीं होता। सच तो यह है कि समय के एक बड़े हिस्से पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता। आठ घंटे नींद में चले जाते हैं और दो घंटे खाने-पीने, तैयार होने एवं नित्य कर्म आदि में चले जाते हैं। यानी हमारे हाथ में दरअसल चौदह घंटे का समय ही होता है। दूसरे शब्दों में जीवन में सिर्फ 58 प्रतिशत समय पर हमारा नियंत्रण संभव है, जबकि 42 प्रतिशत समय हमारे नियंत्रण से बाहर होता है। सुविधा की दृष्टि से यह मान लें कि 40 प्रतिशत समय पर हमारा नियंत्रण नहीं होता, जबकि 60 प्रतिशत समय पर होता है।

इस संदर्भ में सदियों पहले भर्तृहरि की कही गई बात आज भी प्रासंगिक है कि विधाता ने मनुष्य की आयु सौ वर्ष तय की है, जिसमें से आधी रात्रि में चली जाती है, बची आधी में से भी आधी बाल्यावस्था और वृद्धावस्था में गुजर जाती है और बाकी बचे 25 वर्षों में मनुष्य को रोग और वियोग के अनेक दुख झेलने पड़ते हैं और नौकरी-चाकरी करनी पड़ती है। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि जलतरंग के समान चंचल इस जीवन में लेश मात्र सुख भी नहीं है। समय अनमोल है, क्योंकि वास्तव में समय ही संसार की एकमात्र ऐसी चीज है, जो सीमित है। अगर आप दौलत गंवा देते हैं, तो दोबारा कमा सकते हैं। घर गंवा देते हैं, तो दोबारा पा सकते हैं। लेकिन अगर समय गंवा देते हैं, तो आपको वही समय दोबारा नहीं मिल सकता। हमारे पास जीवन में बहुत कम समय है और यह समय सीमित है। यदि हम अपनी अपेक्षित आयु सौ वर्ष मान लें, तो हमारे पास जीवन में कुल 36,500 दिन ही होते हैं। इसी समय हिसाब लगाकर देखें कि इन 36,500 दिनों में से आपके पास कितने दिन बचे हैं, जिनमें आपको अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त करना है? अगर हम जीवन में कुछ करना, कुछ बनना, कुछ पाना चाहते हैं, तो यह अनिवार्य है कि समय का सर्वश्रेष्ठ उपयोग करना सीख लें, ताकि इस धरती पर अपने सीमित समय में हम वह सब हासिल कर सकें, जो हासिल करना चाहते हैं-चाहे वह दौलत या शोहरत हो, या सुख या सफलता हो।

समय का बजट बनाएं...

सूत्र

जिस तरह आप पैसों का बजट बनाते हैं, उसी तरह समय का भी बजट बनाएं। बजट बनाने के लिए आपको यह हिसाब लगाना होता है कि आपका पैसा कहां खर्च हो रहा है। समय के मामले में भी यही नीति अपनाएं। एक डायरी लें और एक सप्ताह तक यह रिकॉर्ड रखें कि आप किस काम में कितना समय खर्च कर रहे हैं। आप जितना बारीक हिसाब रखेंगे, आपको उतना ही ज्यादा फायदा होगा।

दूसरा पहलू

जैसे-जैसे डिजिटलीकरण बढ़ा है, महिलाओं और किशोरियों के साथ होने वाले साइबर अपराधों में तेजी से वृद्धि देखी जा रही है।

किशोरियों को नहीं साइबर क्राइम रोकें

अनीता (बदला हुआ नाम) राजधानी दिल्ली के उत्तम नगर इलाके की रहने वाली एक 20 वर्षीय लड़की है, जो पढ़ाई के साथ-साथ सोशल मीडिया पर भी बहुत सक्रिय रहती है। उसे फोटो तथा वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर अपलोड करना अच्छा लगता है। एक दिन उसके फोन पर किसी अनजान व्यक्ति का मैसेज आया, जिसने उस पर दोस्ती करने के लिए जोर डाला। अनीता ने उसे मना कर दिया और फिर ब्लॉक कर दिया। कुछ दिन बाद उसे दोस्तों से पता चला कि उसके नाम से एक नकली अकाउंट बनाया गया है, जिस पर उसकी फोटो लगी हुई थी और बायो में अश्लील शब्दों के साथ उसका मोबाइल नंबर भी लिखा हुआ था। अनीता इससे काफी डर गई और इस घटना के बाद वह लगातार सहमी रहने लगी।

ज्योति

प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन की काउंसलर सोनी कुमारी बताती हैं कि 'जब तक किशोरियों के माता-पिता उन पर विश्वास नहीं करेंगे, इस प्रकार के साइबर अपराध के मामले बढ़ते जाएंगे।

उसके व्यवहार में परिवर्तन देखकर जब उसकी शिक्षक ने अकेले में उससे बात की, तो उसने अपने साथ हुई घटना के बारे में बताया। उसकी शिक्षक ने जब उसे साइबर सेल में शिकायत करने का सुझाव दिया, तो उसने कहा कि 'मम्मी-पापा को पता चलेगा, तो वे नाराज होंगे।' हालांकि संस्था के सहयोग से शिकायत की गई और उस फेक अकाउंट को बंद कर दिया गया।

सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना किशोरियों का भी अधिकार है। लेकिन उन्हें इसका इस्तेमाल करते समय काफी सतर्क और निडर रहना होगा।

यह सिर्फ एक अनीता का पहला मामला नहीं है, बल्कि उसकी जैसी हजारों ऐसी लड़कियां हैं, जिनके नाम से सोशल मीडिया पर फेक और अश्लील अकाउंट बनाया जाता है। इस संबंध में प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन की काउंसलर सोनी कुमारी बताती हैं कि 'जब तक किशोरियों के माता-पिता उन पर विश्वास नहीं करेंगे, इस प्रकार के साइबर अपराध के मामले बढ़ते जाएंगे। इसके लिए किशोरियों के साथ-साथ माता-पिता की काउंसलिंग की भी जरूरत है।' हाल के दिनों में साइबर अपराध के मामले तेजी से बढ़े हैं। खासकर महिलाओं और किशोरियों के साथ होने वाले साइबर अपराधों में तेजी से वृद्धि देखी जा रही है।

इस संबंध में दिल्ली गर्ल्स स्कूल, शाहदरा की वरिष्ठ शिक्षिका यासमीन खान कहती हैं कि साइबर अपराध के खतरे पहले से ज्यादा बढ़ गए हैं। वह कहती हैं कि सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना किशोरियों का भी अधिकार है। लेकिन उन्हें इसका इस्तेमाल करते समय सतर्क रहना होगा और कोई घटना होने पर निडरता से शिकायत दर्ज करानी होगी। वह कहती हैं कि डिजिटल दुनिया से किशोरियों को नहीं, बल्कि उनके विरुद्ध होने वाले साइबर अपराध को रोकने की जरूरत है, ताकि हम लड़कियों के लिए भी सुरक्षित डिजिटल दुनिया तैयार कर सकें। *(चरखा फीचर)*

आंकड़े

ज्यादा मतों से विजयी

वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में सबसे ज्यादा भारतीय जनता पार्टी के नेता 50 फीसदी से ज्यादा मतों विजयी हुए थे।

भाजपा	224
द्रमुक	19
कांग्रेस	18
वाईएसआरसी	13
टीएमसी	6

स्रोत : ADR

शुद्ध हृदय से ईश्वर की शरण में जाने से बेड़ा पार हो जाता है। जो कुछ मांगते नहीं, भगवान उन्हें स्वयं वह सब देने को तत्पर रहते हैं, जो कल्याणकारी होता है।

ईश्वर निष्ठा

अंतर्यात्रा
शिव कुमार गोयल

महर्षि अरविंद स्वाधीनता आंदोलन में योगदान देने के बाद आध्यात्मिक चिंतन में लग गए। वह एकांत साधना में समय बिताते थे। उनके आश्रम में कुछ प्रबुद्ध भक्तजन दर्शन के लिए पहुंचे। बातचीत के दौरान महर्षि ने कहा, यदि कोई भक्ति में लीन होना चाहता है, तो उसे ईश्वर के प्रति आत्मसमर्पण का संकल्प करना होगा। उसे सांसारिक कामना या अहंकार से पूरी तरह विरत हो जाना चाहिए। उन्होंने लिखा है कि भक्ति और अध्यात्म का मार्ग विशाल समुद्र की तरह है, जिसके द्वारा संसार के सभी भागों की यात्रा की जा सकती है। इसमें बस आवश्यकता होती है-जहाज, पतवार, दिग्दर्शन यंत्र, चालिका शक्ति और एक निपुण कप्तान की। इसमें ब्रह्म विद्या जहाज है, श्रद्धा पतवार, आत्मसमर्पण दिग्दर्शन यंत्र, भगवती चालिका शक्ति और स्वयं भगवान कप्तान होते हैं। परंतु ध्यान रखना होगा कि भगवान के कार्य करने की अपनी पद्धति होती है और कार्य सिद्धि का उनका अपना समय है। शुद्ध हृदय से दुर्गुणों से मुक्त होकर भगवान की शरण में चले जाने से बेड़ा पार हो जाता है। जो लोग भगवान से कुछ मांगते हैं, उन्हें वही मिलता है, लेकिन जो उनसे कुछ मांगते नहीं, भगवान उन्हें स्वयं वह सब देने को तत्पर रहते हैं, जो कल्याणकारी होता है।

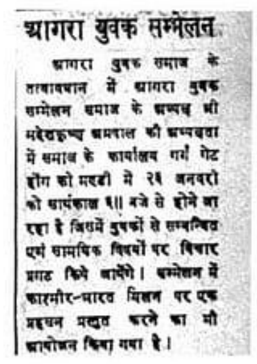

(अमर उजाला आर्काइव से)

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 26 जनवरी, 1957

आगरा युवक समाज का सम्मेलन

आगरा युवक सम्मेलन

आगरा युवक समाज के तत्वावधान में आगरा युवक समाज सम्मेलन के अध्यक्ष महेश कृष्ण अग्रवाल की अध्यक्षता में आज शाम एक सम्मेलन होगा, जिसमें युवकों से संबंधित एवं सामयिक विषयों पर विचार किया जाएगा।

आभासी खेलों के जोखिम

ऑनलाइन गेम से सामाजिकता का दायरा तो सिमटा ही है, असामाजिक तत्वों के गलत इरादे भी बच्चों के लिए मुसीबत बन गए हैं।

मोनिका शर्मा

तकनीक

नई तकनीक से जहां कई फायदे हुए हैं, वहीं इसके भारी नुकसान भी उठाने पड़ रहे हैं। खासकर किशोर उम्र के बच्चों पर ऑनलाइन गेमिंग का नकारात्मक असर हमारे सामाजिक पर्यावरण के लिए एक खतरे की घंटी बन गया है। इससे बच्चों की शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक क्षमता तो प्रभावित हो ही रही है, उनके व्यक्तित्व में एक तरह की नकारात्मकता एवं चिड़चिड़ापन भी देखने में आ रहा है। ऑनलाइन गेम में ज्यादा समय देना बच्चों की रचनात्मक कल्पनाशक्ति को तो खत्म कर ही रहा है, उन्हें अपराध के रास्ते पर भी धकेल रहा है।

हाल ही में एक 15 वर्षीय लड़की ने मोबाइल फोन पर गेम खेलने को लेकर पिता की डांट से नाराज होकर अपनी जान दे दी। एक अन्य घटना में मुंबई में एक सोलह वर्षीय लड़के को जब उसके पिता ने मोबाइल फोन पर गेम खेलते रहने से रोका, तो उसने फांसी लगाकर अपनी जान दे दी। ऐसी दुखद घटनाएं तकनीक के जाल में फंसते किशोर-

मन से जुड़ी डरावनी कहानियां सामने रखती हैं। मुट्ठी में मौजूद तकनीकी सहूलियतें नई पीढ़ी की जिंदगी को जोखिम में डाल रही हैं। बच्चों को भ्रमित करने वाली स्मार्ट स्क्रीन के खेलों की लत जानलेवा साबित हो रही है।

समझ और नासमझी के मेल वाली उम्र के इस पड़ाव पर मोबाइल पर गेम खेलने की लत जान देने, बर्बर अपराध करने या घर छोड़ देने जैसी घटनाओं की वजह बन रही है। माता-पिता या अभिभावक द्वारा रोक-टोक करने पर किशोर-किशोरियों द्वारा अपनों की जान लेने की घटनाएं भी हुई हैं। इतना ही नहीं, स्मार्टफोन पर ऑनलाइन गेम खेलते बच्चे कई बार अपराधियों के चंगुल में भी फंस जाते हैं। कभी निजी जानकारियां और तस्वीरें साझा कर ब्लैकमेलिंग का शिकार भी बनते हैं, तो कभी पैसे गंवा बैठते हैं। वर्चुअल खेल खेलने के लिए लॉगिन करने की प्रक्रिया में व्यक्तिगत जानकारियां, दिनचर्या, पारिवारिक पृष्ठभूमि और भावनात्मक कमजोरियां पता चलने से बच्चे आसानी से साइबर अपराधियों के जाल में फंस जाते हैं।

'क्राई'-चाइल्ड राइट्स ऐंड यू की बीते साल की रिसर्च के मुताबिक, ऑनलाइन दुर्व्यवहार का शिकार बने बच्चों में से 14-18 वर्ष की आयु वर्ग की 40 प्रतिशत लड़कियां और इसी आयु वर्ग के 33 प्रतिशत लड़के वर्चुअल दुनिया में नकारात्मक बर्ताव का शिकार बने।

गौरतलब है कि कुछ समय पहले मध्य प्रदेश के छतरपुर में ऑनलाइन गेमिंग में 40 हजार रुपये हारने पर छठी कक्षा में पढ़ रहे 13 साल के बच्चे ने आत्महत्या कर ली थी। पैसे गंवाने के बाद मां के पूछताछ करने पर उस बच्चे ने फांसी लगाकर अपना जीवन समाप्त कर लिया। लखनऊ में मोबाइल गेम खेलने से मना करने पर बेटे ने अपनी मां को ही गोली मार दी थी। दुनिया के हर हिस्से में बसे बच्चों की मनःस्थिति पर ऑनलाइन गेम के पड़ते दुष्प्रभाव के कारण ही विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी ऑनलाइन गेमिंग को 'गेमिंग डिसऑर्डर' का नाम दिया है। गेमिंग डिसऑर्डर को इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन ऑफ डिजीज में बाकायदा एक व्याधि के तौर पर शामिल किया गया है। किशोर-किशोरियों को दिशाहीन कर रहा यह मायाजाल हमारी समग्र व्यवस्था के लिए खतरा है, क्योंकि स्क्रीन की दुनिया में गुम होकर जान गंवाती यह पीढ़ी ही भावी सामाजिक-पारिवारिक व्यवस्था का परिवेश बनाने वाली है।

यह विडंबना ही है कि व्यावहारिक रूप से जिन चीजों का बच्चों के जीवन में कोई स्थान ही नहीं होना चाहिए, वे नई पीढ़ी के लिए जीने-मरने की परिस्थितियां बना रही हैं। ऐसे मामले किशोरों की जिंदगी में स्मार्ट गैजेट्स और इंटरनेट की बढ़ती दखल के भी उदाहरण हैं। तकनीकी चमक-दमक में उलझती भावी पीढ़ी के मन-मस्तिष्क की यह नकारात्मक दशा और दिशा कई शारीरिक-मानसिक व्याधियों को न्योता दे रही है।

मैदान में खेलकर शारीरिक-मानसिक रूप से मजबूत बनाने वाले बच्चों के खेल भी स्क्रीन की दीवार तक सिमट गए हैं। नतीजतन, सामाजिक जीवन से दूर आभासी संसार में समय बिता रहे बच्चों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इससे सामाजिकता का दायरा तो सिमटा ही है, असामाजिक तत्वों के गलत इरादे भी बच्चों के लिए मुसीबत बन गए हैं। दुखद घटनाओं और आंकड़ों तक स्क्रीन की काल्पनिक दुनिया में खेलने के दुष्प्रभाव हमारे सामने हैं। जीवन से हारने की घटनाएं तो इस लत का सबसे भयावह परिणाम हैं।

संपादकीय जागरण

मंगलवार, 26 मार्च, 2024 : चैत्र कृष्ण प्रतिपदा वि. 2080

विचार कर्म का आधार है

आदर्श आचार संहिता

अभी लोकसभा चुनाव के लिए प्रचार शुरू ही हो रहा है, लेकिन आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन की खबरें आने लगी हैं। बतौर उदाहरण राजस्थान में आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन की 15 सौ से अधिक शिकायतें की जा चुकी हैं। इसी तरह उत्तराखंड में छह सौ अधिक शिकायतें दर्ज की जा चुकी हैं। कर्नाटक में तो 15 करोड़ रुपये से अधिक जब्त किए जा चुके हैं। इससे यदि कुछ स्पष्ट हो रहा है तो यही कि आने वाले दिनों में आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन का सिलसिला और जोर पकड़ेगा। यह सिलसिला यही बयान कर रहा है कि राजनीतिक दल और उनके प्रत्याशी आदर्श आचार संहिता की परवाह नहीं कर रहे हैं। यह तब है जब निर्वाचन आयोग आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन को लेकर सख्त है। उसने एक एप तैयार किया है, जिसमें कोई भी अपनी शिकायत दर्ज करा सकता है। निर्वाचन आयोग ने यह भी व्यवस्था की है कि शिकायत मिलने के सौ मिनट के अंदर कार्रवाई की जा सके। यह अच्छा है कि निर्वाचन आयोग की ओर से शिकायतें दर्ज कराने के लिए जारी एप को लोग उपयोगी मान रहे हैं और वे उसे डाउनलोड भी कर रहे हैं, लेकिन यह चिंता की बात है कि आदर्श आचार संहिता के पालन को लेकर राजनीतिक दल गंभीर नहीं।

चुनाव संबंधी आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन इसीलिए अधिक होता है, क्योंकि उल्लंघन करने वाले कठोर दंड के भागीदार मुश्किल से ही बन पाते हैं। चुनाव जीतने के लिए अनुचित साधनों का इस्तेमाल करने वाले निर्वाचन आयोग से दो हाथ आगे ही रहते हैं। वे मतदाताओं को लुभाने के लिए पैसा, शराब और सामग्री गुपचुप रूप से बांटते हैं। जिन प्रत्याशियों को यह पता होता है कि वे किस सीट से चुनाव लड़ने वाले हैं, वे तो आदर्श आचार संहिता लागू होने के पहले ही मतदाताओं के बीच पैसा बांट देते हैं। इससे इन्कार नहीं कि निर्वाचन आयोग की टीमें चुनाव में अनुचित साधनों का इस्तेमाल रोकने और लोगों के बीच पैसा न बंटने पाए, इसके लिए सचेत रहती हैं, लेकिन कोई भी समझ सकता है कि वह सारा पैसा जब्त नहीं हो पाता होगा, जो मतदाताओं के बीच बांटने के लिए जमा किया गया होता है या फिर उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है। यह भी किसी से छिपा नहीं कि चुनाव में खर्च की जो सीमा है, उससे कहीं ज्यादा पैसा खर्च किया जाता है। चुनाव बाद प्रत्याशी भले ही शपथपत्र देकर यह कहते हों कि उन्होंने तय सीमा के अंदर ही धन खर्च किया, लेकिन सच यही है कि ऐसे अधिकांश शपथपत्र दिखावटी ही अधिक होते हैं। न जाने कितने निर्वाचन क्षेत्र ऐसे हैं, जहां प्रत्याशी तय राशि से कहीं अधिक धन चुनाव लड़ने में खर्च करते हैं। ऐसे में निष्पक्ष और साफ-सुथरे चुनावों के लिए यह आवश्यक है कि निर्वाचन आयोग को और अधिक अधिकार मिलें।

कारागार हो पुख्ता

बांदा मंडलीय कारागार के जेलर और दो डिप्टी जेलर को निलंबित कर दिया गया है। कार्रवाई डीआइजी जेल की रिपोर्ट पर की गई है। निलंबन का कारण विभागीय कार्यों में लापरवाही व शिथिलता बताई गई है। इस कारागार में कुख्यात माफिया मुख्तार अंसारी भी निरुद्ध है। कारागार विभाग के अधिकारी भले स्पष्ट तौर पर कुछ नहीं कह रहे हों, लेकिन इतना तय माना जाता है कि मुख्तार के कारण जेल मैनुअल का पालन नगण्य रहता है। मुख्तार की निगरानी और सुरक्षा व्यवस्था की जांच को लेकर डेढ़ वर्ष पहले डीएम और एसपी ने छापेमारी की थी। गेट की चाबी लाने में देरी किए जाने के कारण दोनों अधिकारियों को काफी देर तक इंतजार करना पड़ा था। मुख्तार की बैरक में तवा चढ़ा मिला था। फ्रिज में उसके आम रखे मिले थे। इसके चलते बांदा जेल के डिप्टी जेलर व पांच वार्डर को निलंबित किया गया था। सिर्फ बांदा कारागार या माफिया मुख्तार ही नहीं, प्रदेश के अन्य कारागार भी बाहुबलियों के लिए सुरक्षित शरणस्थली माने जाते हैं। न मुठभेड़ का भय, ना ही किसी गैंगवार का खतरा। पूरा संजाल जेल से ही संचालित होता है। तभी तो जैमर और क्लोज सर्किट कैमरे बेमतलब साबित होते हैं। मुख्तार के विधायक बेटे अब्बास अंसारी की जेल में पत्नी से गोपनीय मुलाकात और वहीं से कारोबार के संचालन की बात भी सामने आई थी। इसकी गवाही हैं प्रशासनिक अमला द्वारा समय-समय पर कारागार में छापे के दौरान बरामद होने वाले मोबाइल फोन। इससे स्पष्ट होता है कि कारागार के कर्मचारी से लेकर अधिकारी तक बाहुबलियों के मददगार होते हैं। कार्रवाई के नाम पर कुछ दिनों-महीनों का निलंबन होता है, उसके बाद फिर कारागार में तैनाती। सरकार कारागारों की सुरक्षा व्यवस्था पुख्ता करने और अपराधियों-कर्मचारियों के गठजोड़ को तोड़ने के लिए हाईटेक उपकरण लगाने का समय-समय पर निर्देश देती रहती है। कारागारों को अपराधियों की सुरक्षित शरणस्थली बनने से रोकने के लिए कुछ और उपायों की आवश्यकता है। ऐसे अपराधी जो कारागार से अपने संजाल का संचालन करने के लिए कुख्यात हैं, उन्हें कुछ माह के अंतराल पर अन्य जेल में स्थानांतरित किया जाना चाहिए। साथ ही दागी जेल कर्मियों की भी पहचान की जानी चाहिए।

कारागारों को अपराधियों की सुरक्षित शरणस्थली बनने से रोकने के लिए कुछ और उपायों की आवश्यकता है

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या रूस का यह आरोप विश्वसनीय दिखता है कि मास्को में आतंकी हमले के पीछे यूक्रेन की भूमिका है?

आज का सवाल
क्या आदर्श चुनाव आचार संहिता को और कड़ा किए जाने की आवश्यकता है?

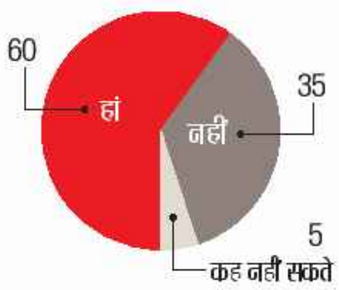

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

लोकसभा चुनाव की स्पष्ट होती तस्वीर

अवधेश कुमार

फिलहाल नरेन्द्र मोदी के समक्ष विपक्ष का कोई एक नेता या नेताओं का समूह लोकप्रियता और विश्वसनीयता के मामले में टिकता नहीं दिख रहा

लोकसभा के चुनावी परिदृश्य का मोटा-मोटा आकलन करें तो राष्ट्रीय स्तर पर प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में राजग और दूसरी ओर कांग्रेस के नेतृत्व वाला आइएनडीआइए है। इनके बीच गुणात्मक अंतर हैं। कुछ राज्यों को छोड़ दें तो राजग का राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार है और एक बड़ी पार्टी भाजपा के पास इसका नेतृत्व है। वह संगठित है तथा उसका एक घोषित नेता है। दूसरी ओर आइएनडीआइए का राष्ट्रीय स्तर पर कोई स्वरूप नहीं है, न कोई नेता और न कोई एक ढांचा है। अलग-अलग राज्यों में इसका स्वरूप भी अलग है। राजग की विशेषता यह है कि इसमें आइएनडीआइए के कई दल स्वयं आए हैं या इससे बाहर के दलों ने भी भाजपा से हाथ मिलाने की खुद पहल की है। उदाहरण के लिए बिहार में नीतीश कुमार, उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय लोकदल, महाराष्ट्र में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी का अजीत पवार धड़ा और आंध्र प्रदेश में चंद्रबाबू नायडू ने स्वयं भाजपा के साथ गठबंधन करने को लेकर पहल की है। इसके विपरीत आइएनडीआइए को पहले तो पार्टियों और नेताओं को साथ लाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी। बाद में नेताओं में उसे छोड़कर जाने की प्रवृत्ति दिखी। आज की स्थिति में आइएनडीआइए बिहार, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली में कुछ दिखाई देता है। दोनों पक्षों की इस स्थिति से हम चुनाव नतीजों का अनुमान लगा सकते हैं।

वैसे चुनावों में दलों या गठबंधनों की कुल अंकगणितीय ताकत, संपूर्ण देश का परिवेश, सत्तारूढ़ पार्टी या गठजोड़ तथा विरोधियों द्वारा उठाए गए मुद्दे, चुनाव पूर्व के कुछ महीनों में मतदाताओं को प्रभावित करने वाली घटनाएं और नेतृत्व का चेहरा ही मतदान में मुख्य भूमिका निभाते हैं। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 37.36 प्रतिशत मत प्राप्त किया था और राजग को कुल मिलाकर 45 प्रतिशत मत प्राप्त हुए थे। वर्तमान गठबंधनों का ऐसा निश्चित आंकड़ा निकलना कठिन है, क्योंकि शिवसेना, राकांपा टूट चुकी हैं तथा कई दल ऐसे हैं जिन्होंने पिछली बार लोकसभा चुनाव में हिस्सा नहीं लिया था। इसके बावजूद यदि हम पिछले चुनाव के आंकड़े एवं उनके साथ वर्तमान सांसदों एवं विधायकों को मिलाकर देखें तो राजग का मत 50 प्रतिशत से ऊपर चला जाता है। ध्यान रखिए 1984 में कांग्रेस को 46.6 प्रतिशत मत मिले थे और उसे 414 सीटें प्राप्त हुई थीं। आइएनडीआइए का आंकड़ा निकालना ज्यादा कठिन है। अगर वाममोर्चा बंगाल में कांग्रेस से गठबंधन करता है और केरल में खिलाफ लड़ता है तो उनके मतों को कैसे जोड़ा जाए। वर्तमान राजनीतिक स्थितियों के आधार पर गणना करें तो यह कुल मिलाकर 30-31 प्रतिशत से ऊपर नहीं जाता। दोनों गठबंधनों की शुरुआत ही इतने अंतर से हो रही है। इतने बड़े अंतर की तभी भरपाई हो सकती है, जब केंद्रीय सत्ता के विरुद्ध जनता में व्यापक आक्रोश और उसे उखाड़ फेंकने की प्रबल भावना हो, लेकिन अभी तो मोदी सरकार को लेकर ऐसा कुछ नजर नहीं आता। आइएनडीआइए में एकता भी नजर नहीं आती। ऐसी स्थिति में वह एकजुट राजग से कैसे मुकाबला करेगा?

अवधेश राजपूत

वर्तमान चुनाव में मुख्य मुद्दे क्या हैं? पिछले दिनों प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने अपने मंत्रिमंडल की अंतिम बैठक में वर्ष 2047 का दृष्टिकोण पत्र प्रस्तुत किया, अगले पांच वर्षों की कार्ययोजना दी तथा सरकार में लौटने पर 100 दिनों में क्या करना है, यह भी अधिकारियों और मंत्रियों को बताया। चुनाव के पूर्व की इस बैठक के राजनीतिक मकसद होंगे। इससे दो संदेश निकले। पहला, प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भाजपा और राजग लोकसभा चुनाव में विजय को लेकर आश्वस्त हैं, इसलिए उनका व्यवहार उसी के अनुसार है। दूसरा संदेश यह गया है कि हम देश को 2047 तक विकसित बनाने के लिए संकल्पबद्ध हैं तथा चुनाव में रहते हुए भी लगातार उस लक्ष्य पर काम कर रहे हैं। हालांकि कुछ कमियां दिखीं, परंतु आम लोगों तक सरकार की योजनाएं पहुंची हैं। उन्हें महसूस हुआ है कि पूर्व में सामाजिक न्याय और पिछड़ों-दलितों का नारा लगाने वाली सरकारों से मोदी सरकार उनके लिए ज्यादा अनुकूल साबित हुई है। इसलिए विकास, जनकल्याण आदि मुद्दों पर विपक्ष राजग को चुनौती देने की स्थिति में नहीं। उनकी ओर से कोई दूरगामी विजन भी देश के समक्ष ऐसा नहीं रखा गया, जिससे वे स्वयं को बेहतर साबित कर सकें।

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का असर संपूर्ण देश में व्याप्त है। विपक्ष के नेताओं द्वारा प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण ठुकराना लोगों को नहीं भाया। वस्तुतः हिंदुत्व और सनातन इस चुनाव में और ज्यादा सशक्त मुद्दा बन चुका है। केंद्र एवं भाजपा की राज्य सरकारों की नीतियों और वक्तव्यों से हिंदुत्व, भारतीय संस्कृति और भारतीय राष्ट्रभाव का मनोविज्ञान ज्यादा प्रखर और सशक्त हुआ है। द्रमुक नेताओं द्वारा सनातन के विरुद्ध वक्तव्य तमिलनाडु तक के परिवेश में आए बदलाव का उदाहरण है। देश का बहुमत हिंदुत्व और राम मंदिर को लेकर सकारात्मक है। इसके विरुद्ध की गईं टिप्पणियां केवल उस राज्य में ही नहीं, दूसरे राज्यों में भी मतदाताओं के एक वर्ग को आइएनडीआइए के विरुद्ध जाने के लिए प्रेरित कर सकती हैं।

भाजपा के विरुद्ध भी समर्थकों एवं कार्यकर्ताओं के एक वर्ग में अपनी अनदेखी, अलग-अलग दलों से लोगों को लिए जाने, उन्हें महत्व देने आदि को लेकर असंतोष गहराता दिख रहा है, लेकिन मूल मुद्दे उनके अंतर्निहित असंतोष पर भारी पड़ते हैं। कार्यकर्ताओं और समर्थकों के बीच यही भाव पैदा होता है कि अगर सरकार चली गई तो इसे हिंदुत्व, हमारी संस्कृति और राष्ट्रभाव के समर्थक नेताओं और राजनीतिक दलों की पराजय के रूप में देखा जाएगा। यह भाव तमाम असंतोषों के बावजूद भाजपा के पक्ष में जा रहा है। नेतृत्व के चेहरे को लेकर नरेन्द्र मोदी के समक्ष विपक्ष का कोई एक नेता या नेताओं का समूह लोकप्रियता तथा जनता की विश्वसनीयता के मामले में टिकता नहीं दिख रहा।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

भ्रमित करने वाले खुशहाली के आंकड़े

डा. जयंतीलाल भंडारी

जिन देशों को सबसे खुशहाल देश बताया जा रहा है, वहां भारत की तुलना में आबादी और चुनौतियां, दोनों बहुत कम हैं

दोषपूर्ण न हो खुशहाली का पैमाना ● फाइल

पिछले दिनों प्रकाशित वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट-2024 में 143 देशों की सूची में भारत को 126वां स्थान दिया गया। तब से लोग इसे अतार्किक और अविश्वसनीय बताते हुए टिप्पणियां कर रहे हैं। यूरोपीय विद्वानों द्वारा निर्धारित विभिन्न मापदंडों पर आधारित देशों को खुशहाली की रैंकिंग देने वाली यह सूची हास्यास्पद और भ्रमित करने वाली है। इसमें भारत से चार पायदान ऊपर 122वें स्थान पर स्थित पाकिस्तान दुनिया भर में महंगाई, कर्ज, धार्मिक आजादी एवं लोकतांत्रिक चुनौतियों से ग्रस्त एक ऐसा देश है, जिसकी सत्ता में सांप्रदायिक कट्टरपंथी जमात अग्रिम पंक्ति में हैं। कदम-कदम पर मजहबी पाबंदियों वाला कुवैत दुनिया का 13वां सबसे खुशहाल देश है। हमास के साथ युद्ध ने जिस इजरायल के हजारों लोगों को चिंतित कर रखा है, उसे दुनिया का पांचवां सबसे खुशहाल देश बताया गया है। इतना ही नहीं, युद्ध से पीड़ित, क्षतिग्रस्त, हजारों मौतों का सामना कर रहे रूस 72वें, फलस्तीन 103वें तथा यूक्रेन 105वें क्रम पर हैं। इस विश्व खुशहाली रिपोर्ट में बेमेल गणनाएं भी की गई हैं। दुनिया की सबसे बड़ी आबादी के साथ सातवां सबसे बड़ा भू-भाग रखने वाले भारत की तुलना दुनिया के छोटे-छोटे, निम्न आबादी एवं कम चुनौतियों का सामना करने वाले देशों से कैसे की जा सकती है? खुशहाली को महज आर्थिक प्रगति और संसाधनों की अधिकता के मद्देनजर देखा जाना उपयुक्त नहीं है। जिन देशों को खुशहाल बताया गया है वहां आबादी, चुनौतियां बहुत कम हैं तथा धार्मिक विद्वेष भी नहीं है। ऐसे छोटे देशों की सरकारों को किसी समस्या को सुलझाने में ज्यादा समय नहीं लगता। उनकी तुलना बड़ी-बड़ी समस्याओं का सामना कर रहे भारत जैसे विशाल देश से कैसे की जा सकती है?

वैश्विक खुशहाली रिपोर्ट में भारत के संबंध में कुछ चमकीले परिदृश्य को ध्यान में नहीं रखा गया है, जिनकी अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक सहित दुनिया के कई संगठन अपने शोध पत्रों के आधार पर सराहना कर रहे हैं। भारत में मानव विकास के तहत गरीबी में कमी लाने के प्रयास को भारी सफलता मिली है। पिछले एक दशक में भारत में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए हैं। भारत आम आदमी को डिजिटल दुनिया से जोड़ने वाला विश्व का प्रमुख देश बना है। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत 80 करोड़ से अधिक लोगों को मुफ्त अनाज मिल रहा है। सरकार द्वारा गरीबों एवं किसानों के बैंक खातों में सीधे 32 लाख करोड़ रुपये से अधिक धनराशि भेजकर उनका सशक्तीकरण किया गया है। इसमें संदेह नहीं कि खुशहाली की सूची में विभिन्न देशों की रैंकिंग अनुचित और अन्यायपूर्ण ढंग से की गई है, लेकिन यह याद रहे कि हमें आम आदमी के आर्थिक उत्थान के साथ खुशहाली के विभिन्न पैमानों पर आगे बढ़ने के लिए अभी मीलों चलना है। हमें देश में आय असमानता के अंतर को भी कम करने के लिए बड़े प्रयास करने होंगे। गत दिनों प्रकाशित न्यूयार्क यूनिवर्सिटी रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2022-23 में भारत की कुल आय का 22.6 प्रतिशत हिस्सा सबसे अमीर एक प्रतिशत लोगों के पास गया। देश की सबसे अमीर एक प्रतिशत आबादी के पास राष्ट्रीय संपत्ति का 39.5 प्रतिशत हिस्सा था, जबकि सबसे गरीब 50 प्रतिशत आबादी के पास केवल 6.5 प्रतिशत। रिपोर्ट के अनुसार भारत में कर प्रणाली प्रतिगामी है, जिसका अर्थ है कि अमीर लोग अपनी संपत्ति के अनुपात में कम टैक्स दे रहे हैं।

हमें देश में मानव विकास के विभिन्न पैमानों पर भी तेजी से आगे बढ़ने पर ध्यान देना होगा। हाल में संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी मानव विकास सूचकांक (एचडीआइ) रिपोर्ट-2022 में भारत 193 देशों की सूची में 134वें स्थान पर है। यद्यपि भारत की रैंकिंग में पिछले वर्ष की रिपोर्ट के मुकाबले एक पायदान का सुधार हुआ है, लेकिन पिछले 34 वर्षों से वह 131 से 135वें स्थान पर ही झूल रहा है। एचडीआइ का तात्पर्य मानव विकास के तीन बुनियादी आयामों-लंबा एवं स्वस्थ जीवन, शिक्षा तक पहुंच और सभ्य जीवन स्तर में औसत उपलब्धियों के आकलन से है। उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र ने नए मानव विकास सूचकांक में भारत की औसत बढ़त को दुनिया में सर्वश्रेष्ठ कहा है। पिछले एक वर्ष में भारतीयों की औसत आमदनी में 6.3 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। भारत में जीवन प्रत्याशा में शानदार वृद्धि हुई है। कुछ वर्ष पहले भारत में जीवन प्रत्याशा का औसत 62.2 था, जो अब बढ़कर 67.7 हो गया है। भारत ने लैंगिक असमानता को कम करने में भी सफलता पाई है।

स्पष्ट है कि हमें गरीब एवं असंगठित क्षेत्र के मजदूरों की चिंताओं पर अधिक ध्यान देना होगा। पिछले दिनों एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया था कि ऐसे सभी आठ करोड़ मजदूरों को अगले दो माह में राशन कार्ड उपलब्ध कराएं जाएं, जिनके पास अभी नहीं हैं, ताकि वे खाद्य सुरक्षा का लाभ उठा सकें। हमें देश में आर्थिक आजादी के लिए और प्रयास करने होंगे। सरकार द्वारा आम आदमी की प्रति व्यक्ति आय और खुशहाली बढ़ाने के लिए जो व्यय किए जाते हैं, वे बुनियादी ढांचे पर निवेश की तरह ही लाभप्रद होते हैं। यह समय की मांग है कि देश में करोड़ों लोगों की गरीबी, भूख, कुपोषण, डिजिटल शिक्षा, रोजगार, उद्यमिता, ग्रामीण युवाओं के तकनीकी प्रशिक्षण और स्वास्थ्य की चुनौतियों को कम करने के लिए सरकार हरसंभव प्रयास करे। ऐसे प्रयासों से ही आम भारतीय के चेहरे पर मुस्कुराहट बढ़ेगी, देश में खुशहाली आएगी और वैश्विक खुशहाली रिपोर्ट यदि दोषपूर्ण तरीके से तैयार न की गई तो उसमे भी हम ऊंचे क्रम पर दिखाई देंगे।

(लेखक एक्रोपोलिस इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट स्टडीज एंड रिसर्च, इंदौर के निदेशक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

आत्मविश्लेषण

आध्यात्मिक साधकों के लिए जो सबसे पहला और अंतिम शब्द है, वह है आत्मविश्लेषण। यानी स्वयं को देखने और समझने का प्रयास। जब कोई स्वयं को देखने लगता है तो वह बहुत चीजों को एक ही रूप में देखने लगता है। यानी उसमें देखने का विभेद मिट जाता है। वह सभी को एक समान देखने लगता है।

आध्यात्मिक अर्थ ग्रहण करने के लिए आत्मविश्लेषण करना ही होगा, दूसरा कोई उपाय नहीं है। यह ईश्वरीय सत्ता स्थायी रूप से सभी वस्तुओं में स्थित है, इसलिए उन्हें देखने के लिए स्वयं को सूक्ष्मतम में प्रतिष्ठित करना पड़ेगा, गहरे से गहरे में जाना पड़ेगा। जो सद्गुरु हैं, वे हमें समझा देंगे कि आत्मा मन के कई स्तरों से अत्यंत सूक्ष्म है। मन का यह स्तर परिवर्तनशील और क्षणजीवी है, लेकिन आत्मा ही शाश्वत है। इसलिए आध्यात्मिक ज्ञान से जिस आनंद को हम प्राप्त करेंगे, वह शाश्वत आनंद होगा। इसलिए इसे 'ब्रह्मानंद' कहा जाता है। अस्थायी वस्तुओं से आनंद नहीं प्राप्त किया जा सकता है। अस्थायी और समय की तरंगों से सजी वस्तुएं आएंगी और जाएंगी। वे कभी हमें हंसाएंगी, तो कभी रुलाएंगी। समय के घोड़े पर सवार होकर जो वस्तुएं आती हैं, वे कितनी भी प्रिय क्यों न हों, एक दिन निश्चित और असंदिग्ध रूप से हमें छोड़कर एक झटके के साथ निकम्मा और भिखारी बनाकर चली जाएंगी। कारण यही कि समय का पहिया रुकता नहीं है।

यम कहते हैं, 'हे नचिकेता, परमपुरुष के साम्राज्य का महाद्वार तुम्हारे सामने खुला हुआ है। जिसने संपूर्ण रूप से मानस तत्वों का ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उसने विनाशशील और अविनाशी का भी ज्ञान प्राप्त कर लिया है। मानसिक विकास के साथ-साथ जब कोई खंड सुख से अखंड सुख की ओर बढ़ता है तब उसे भौतिक सुख की अपेक्षा मानसिक सुख में ज्यादा रुचि हो जाती है। देश प्रेम या इसी तरह के सूक्ष्म सुख के लिए मनुष्य अपने जीवन का उत्सर्ग करने के लिए तत्पर रहते हैं। यह सभी मानवीय मन के प्रभुत्व का प्रमाण है।

श्री श्री आनंदमूर्ति

पाठकनामा

pathaknama@gkp.jagran.com

नागरिक अपने दायित्व को भी समझें

नागरिकों को अपने दायित्व को भी समझना चाहिए। सिर्फ सरकार की सुविधाओं पर निर्भर न रहें। अपने-अपने मोहल्लों में सभी लोगों को सफाई पर ध्यान देने की जरूरत है। आमतौर पर लोग अपने घरों का कूड़ा सड़क पर फेंक देते हैं। यह सभ्य समाज का परिचायक नहीं है। सभी लोगों को अपने घर के सामने अपना खुद डस्टबिन लगाना चाहिए। जिसमें प्रतिदिन का कूड़ा डाला जा सके। इसके लिए सिर्फ नगर पालिका अथवा सरकारी तंत्र पर निर्भर रहना मुनासिब नहीं है। देश को आगे ले जाने के लिए सबसे पहले सभ्य नागरिक होने का परिचय देना पड़ेगा।

विशाल अग्रवाल, कोतवाली रोड देवरिया

रोकना होगा प्राकृतिक संसाधनों का दोहन

पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी को मिलकर काम करना होगा। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन हार हाल में रुकना चाहिए। मौसम में बदलाव का कारण पर्यावरण से छेड़छाड़ है। प्रदूषण के कारण वातावरण दिन-प्रतिदिन खराब होता जा रहा है। धरती पर कूड़े-कचरे का ढेर बढ़ता जा रहा है। इससे जल, वायु और भूमि प्रदूषित हो रही है। इसकी वजह से मानव के अलावा सभी जीव-जंतुओं के स्वास्थ्य पर गलत प्रभाव पड़ रहा है। यदि समय रहते इस पर नियंत्रण नहीं पाया गया तो भविष्य में गंभीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे। इससे बचने के लिए पर्यावरण संरक्षण जरूरी है। इसमें सभी को सहभागी बनकर कार्य करना होगा। धरती को एक बार फिर हरा-भरा बनाने के लिए सभी को पौधे लगाने होंगे। पौधों की रक्षा करके उन्हें वृक्ष बनाना होगा। हरे पेड़ों की कटाई प्रतिदिन की जा रही है। पेड़ न कटे इसका भी उपाय होना चाहिए। यह काम सिर्फ सरकार का नहीं हम सबका होना चाहिए।

मनोज कसेरा, गोलाबाजार, , संतकबीर नगर

संस्कृति की रक्षा करने आगे आएं युवा

पुरातन भारतीय संस्कृति हमारी धरोहर और पहचान है। दुर्भाग्य से आज की युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर अपनी सनातन संस्कृति भूलती जा रही है। इसी का असर है कि उनके रहन-सहन व परिधान बदलते जा रहे हैं। विभिन्न टीवी चैनलों पर खुलेआम भारतीय संस्कृति को मुंह चिढ़ाते कार्यक्रम और धारावाहिक प्रसारित किए जा रहे हैं। मां-बाप बोझ लगने लगे हैं, जिससे वृद्धाश्रमों में बुजुर्गों की संख्या बढ़ती जा रही है। अपनी जिम्मेदारियों व सेवाभाव को भूल युवा पीढ़ी मानसिक रूप से विकलांग होती जा रही है। इस स्थिति को बदलने के लिए युवाओं को ही आगे आना होगा। गाय, गंगा व माता-पिता की सेवा के लिए नैतिक रूप से जिम्मेदार होना होगा।

त्रिपुरारी मिश्र, अधिवक्ता, पडरौना

आसपास रखें साफ-सफाई

जीवन में स्वच्छता बहुत जरूरी है। अपने आसपास साफ-सफाई रखें। इससे न केवल वातावरण शुद्ध रहता है, बल्कि कई संक्रामक बीमारियों से बचा जा सकता है। इसलिए लोगों को साफ सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए। दूसरों को भी स्वच्छता के प्रति प्रेरित करना चाहिए। जब लोग स्वच्छता के प्रति जागरूकता दिखाएंगे तो निश्चित रूप से किसी भी स्थान पर गंदगी नहीं रहेगी, वहीं हम स्वच्छता के प्रति लापरवाही बरतेंगे तो कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। स्वस्थ जीवन जीने के लिए स्वच्छता बहुत जरूरी है।

सूरज, दुबौला, बस्ती

इंटरनेट के दुरुपयोग से बचाएं

इंटरनेट के दुरुपयोग से बच्चों को बचाने की जरूरत है। इसके गलत इस्तेमाल से उनका भविष्य अंधकारमय हो सकता है, इसलिए अभिभावकों को सतर्क रहने की आवश्यकता है। बच्चों को मोबाइल, लैपटाप के उपयोग की समय सीमा निर्धारित करनी चाहिए। शारीरिक गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। बच्चे आनलाइन क्या कर रहे हैं, उसकी निगरानी करनी होगी और नियंत्रित भी करना होगा। अत्यधिक इंटरनेट मीडिया के उपयोग के खतरों और परिणामों के बारे में भी बच्चों के साथ खुलकर बात करनी चाहिए। इसके अलावा अभिभावकों को भी खुद के इंटरनेट प्रयोग पर भी नियंत्रण रखना चाहिए।

शिवम मिश्र, बांसगांव, गोरखपुर

होली पर नशे से रहें दूर

होली रंगों का त्योहार है। इस दिन हम एक-दूसरे को अबीर-गुलाल लगाकर व बधाई देकर सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देते हैं। हाल के कुछ वर्षों में देखा जा रहा है कि नशे के सेवन से पर्व की मिठास गायब होती जा रही है। युवा पीढ़ी को इससे दूर रहना होगा, क्योंकि नशे के चलते फूहड़ मजाक होते हैं, बाद में यही विवाद का कारण भी बनते हैं। लोगों के बीच मिलने-जुलने का चलन भी अब समाप्त होता जा रहा है। इतना ही नहीं नशे की वजह से दुर्घटनाएं होती हैं, जिससे कई बार जान तक चली जाती है। इसलिए युवाओं को इससे बचना चाहिए। पर्व के दिन रंगों का आनंद लें, घरों में बने पकवान खाएं। एक-दूसरे से उल्लासपूर्वक मिलें।

टीएन ठाकुर, रामजानकीनगर, गोरखपुर

पोस्ट

जेल में अरविंद केजरीवाल के आदेश टाइप कैसे हो रहे हैं, इसकी जांच होनी चाहिए। क्या जेल में हर कैदी को एक टाइपिस्ट मिलता है? क्या ईडी की हिरासत में यह सुविधा होती है? बिना तारीख और सरकारी मुहर वाली चिट्ठी बाहर कौन भेज रहा है?

दिलीप मंडल@Profdilipmandal

शराब घोटाले में अरविंद केजरीवाल को जब ईडी का समन नहीं मिला था तब कांग्रेस और पार्टी के वरिष्ठ नेता अजय माकन ने इस घोटाले को लेकर कई सनसनीखेज आरोप लगाए थे। कालांतर में ईडी ने केजरीवाल को समन भेजा, गिरफ्तारी भी हुई। कांग्रेस का रुख-रवैया तब सही था या अब? अखिलेश सिंह@akhileshsi1

लोग कांग्रेस के दिग्गज दिग्विजय सिंह की कुछ पैमानों पर चाहे जितनी आलोचना कर लें, लेकिन वह नेता एकदम खांटी किस्म के हैं। शिवराज सिंह चौहान सरकार के खिलाफ जमकर धरना-प्रदर्शन करते रहे। अब राजगढ़ से लोकसभा चुनाव लड़ने जा रहे हैं। जबकि सोनिया गांधी रायबरेली छोड़कर चली गईं और अमेठी से अभी तक चुनाव लड़ने का साहस राहुल गांधी नहीं दिखा सके। ऐसे नेता कांग्रेस में बहुत कम बचे हैं।

हर्ष वर्धन त्रिपाठी@MediaHarshVT

जनपथ

आटा गीला हो गया कंगाली के दौर,
खाते पर ताला दिए बैठा कोई और।
बैठा कोई और लड़ें किस भांति इलेक्शन,
बिन पैसे के बंद हो गए सारे एक्शन।
चेहरा हुआ वसंत की तरह पीला-पीला,
है उदास कांग्रेस हाथ ले आटा गीला!

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान सम्पादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान सम्पादक-संजय गुप्त,

जागरण प्रकाशन लि. के लिए : प्रवीण कुमार द्वारा 23 सिविल लाइंस, गोरखपुर से प्रकाशित एवं दैनिक जागरण प्रेस, प्लाट संख्या K- 31, सेक्टर - 15, गीडा, तहसील -सहजनवां, गोरखपुर से मुद्रित, सम्पादक (उत्तर प्रदेश) -आशुतोष शुक्ल* दूरभाष : 0551-2205600, फैक्स नंबर- 2338699,

E-mail: gorakhpur@gkp.jagran.com, R.N.I. No. 26729/75 पंजीकरण संख्या- जी आर 23* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद गोरखपुर न्यायालय के अधीन ही होंगे। वर्ष 49 अंक 339

****